© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन के सन्दर्भ में बुद्धितत्व समीक्षा

पवन कुमार पाराशर
शोधच्छात्र,
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश,भारत.

शोधपत्रोद्देश्य – वेदान्त दर्शन के अद्वैतवेदान्त शाखा में प्रायः बुद्धि के बारे में देखने, पढ़ने को मिलता है कि बुद्धि सत्व, रज, तमादि के भेद से तीन प्रकार की है। और भी कई लक्षण प्राप्त होते हैं, किन्तु विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन के सन्दर्भ में बुद्धितत्व की विवेचना क्या है। यह अप्राप्त है, अतः यह शोधनीय विषय है।

परिचय- विशिष्टाद्वैतवेदान्त दर्शन के प्रवर्तक रामानुजाचार्य जी हैं। उन्होंने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1037-1137 ई. में किया था। रामानुजाचार्य जी का जन्म 1017 ई. में श्री पेरम्बटूर तमिलनाडु भारत में हुआ था। रामानुजाचार्य जी के गुरु श्री यामुनाचार्य जी थे। भगवत प्राप्ति व सनातन धर्म के प्रचार प्रसार करने के लिए संन्यासी होने की दीक्षा यतिराजनामक संन्यासी से ली। रामानुजाचार्य जी साक्षात् शेषनाग के ही अवतार थे। ऐसा अनेक विद्वानों के द्वारा कथित है। जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है- तब-तब ईश्वर किसी न किसी के रूप में अवतरित होते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है कि-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (गीता 4-7)

रामानुजाचार्य जी ने वैष्णव सम्प्रदाय का प्रचार प्रसार दक्षिण भारत में खूब किया तथा 1137 ई. में पांच भौतिक शरीर को त्याग कर तमिलनाडु भारत में दिवंगत हो गये। विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन के अनुसार परमात्मा विशिष्ट है। अर्थात् अद्वैत वेदान्त दर्शन में जीव और सृष्टि दोनों ही सत्य हैं, दोनों की ही सत्ता है, किन्तु इन दोनो में भी जो विशिष्ट सत्तावान है वही परमात्म तत्व है। जीव और जगत् दोनों ही उससे उत्पन्न हैं। इसलिए विशिष्टाद्वैत से परमात्मा को ही लिया गया है।

सिद्धान्त-

1. विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन में शरीरविशिष्ट जीवात्मा अंश व अंतर्यामी परमात्मा अंशी है।

2. विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में शरीर विशेषण तथा आत्मतत्व विशेष्य है।

3. जीव-जगत कार्यरूप से भिन्न है किन्तु ब्रह्म से उद्‌भूत हैं।

4. मुक्तात्मा ईश्वर के सदृश है किन्तु ईश्वर नहीं है।

5. ब्रह्म एक ही है किन्तु आवश्यकतानुसार अनेक रूपों में विभक्त हो जाता है।

विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन के प्रमुखग्रन्थ-

विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शन के प्रमुख निम्नलिखित ग्रन्थ हैं-

1. वेदान्त संग्रह, 2. श्रीभाष्य, 3. गीताभाष्य, 4. वेदान्तदीप, 5. वेदान्तसार, 6. शरणागतिपद्य, 7. श्री रंगगद्य, 8. श्रीवैकुण्ठगद्य, 9. नित्यग्रन्थ।

बुद्धिविमर्श- बुद्धियोग के अनुसार बुद्धि परमात्मतत्व प्राप्त करने का साधन है। ज्ञानेन्द्रिय गणना के अनुसार बुद्धि ज्ञानेन्द्रिय है, जिससे समस्त ज्ञान की प्राप्ति होती है। बुद्धि के बिना विशिष्टाद्वैत वेदान्तदर्शनादि दर्शनों का विवेचन करना किसी भी दार्शनिक के लिए सम्भव नहीं है। न्यायदर्शन में ज्ञान को बुद्धि का पर्याय माना है किन्तु समस्त ज्ञान बुद्धि से ही प्राप्त होता है रमाानुजसम्प्रदाय के ग्रन्थ विशिष्टाद्वैतसिद्धि में बुद्धि के सम्बन्ध में लिखा है-

श्रिया बुद्ध्या गिरा कान्त्या कीर्त्या नुष्ट्या लयोर्जया,

विद्याऽविद्या शक्त्या मायया च निषेवित इति।। -(विशि.सि. 2/1/4/ पे. 122)

यहां पर बुद्धि को प्रकृति की पर्याय रूप से ग्रहण किया है। प्रकृति में सब कुछ उपलब्ध है किन्तु सब प्राप्त नहीं कर सकते। जिसके पास बुद्धि है वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है। इसलिए यहां पर प्रकृति की पर्याय बुद्धि को माना है। उसी भाव को गीता में स्पष्ट किया है-

भूमिरापोऽनलो वायुः खंमनो बुद्धिरेव च।

अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।। (गीता 7-4)

यहां पर बुद्धि की गणना अष्ट प्रकार की प्रकृति में की है। विशिष्टाद्वैतसिद्धि में बुद्धि को विज्ञान की शक्ति के रूप में ग्रहण किया है-

बुद्धेर्विज्ञानशक्तिता (3/26/31)-(विशि.सि.)

ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि से ही होती है। अतः विज्ञान की शक्ति बुद्धि को ही स्वीकार किया है। विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में मन, बुद्धि, **अहंकार को चित्तशब्द से प्रतिपादित किया है।**

सूत्रम्- मनोबुद्धयहंकार चिन्तशब्दैरप्यमिधीयते। 112/1/1011 (**वि.सि. पे.** 133

संस्कारमात्रजन्यज्ञान ही स्मृति है और वह स्मृति बुद्धि की ही पर्याय है। स्मृति के बारे में भी विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त में कहा है-

सूत्रम्- स्मृतिः प्रत्यभिज्ञा चान्तर्भूता।। 4/1/7 (**विशि. सि. पे.** 306)

न्यायदर्शन में स्मृति अनुभव में अभेद सम्बन्ध है किन्तु विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में स्मृति अनुभव में परस्पर भेद स्वीकार किया है। विशिष्टाद्वैत सिद्धि में लिखा भी है-

सूत्रम्- स्मृत्यादिकारणं च।। 2/1/14 (**विशि. पे.** 141)

विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त में स्मृति व अनुभव में भेद सम्बन्ध स्वीकार किया है। परन्तु मोक्ष साधन में स्मृति परमसहायिका है। यथा बुद्धि की पर्याय स्मृति है उसी प्रकार बुद्धि का प्रकार मन है। मन के बारे में विशिष्टाद्वैत सिद्धि में कहा है कि-

मन एव बन्धकारणम्। 2/1/11 (**विशि.सि. पे.** 138)

शब्दादिविषय संगावस्थायामेव मनसो बन्ध कारणम् (2/1/11)

बुद्धि का पर्याय मन है किन्तु बुद्धि अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करती जब कि मन को बन्धन का कारण माना है। विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में ही बुद्धि व मन को चित्त का पर्याय माना है-

मनोबुद्धिरहंकारश्चिन्तमित्यन्तरात्मकम्।

चतुर्धा लक्ष्यते भेदो वृत्या लक्षणरूपया।। -(3/26/11/14) (**विशि.पे.** 168)

बुद्धि को स्मृति का पर्याय मन का पर्याय तथा धृति का भी पर्याय माना है। वैसे तो धृति का तात्पर्य होता है धारण शक्ति। लौक में ग्रन्थ धारण शक्ति के नाम से धृति का अर्थ प्रसिद्ध है विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में इसके बारे में श्लोक आता है-

सर्वगतं सुसुक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनि परि-पश्यन्ति धीराः। -(श्रीभाष्य पृ. 401)

विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में बुद्धि को अलग-अलग प्रसंग में प्रयोग देखने को मिलता है- जैसे बुद्धि को मन का पर्याय मान लिया, धृति का पर्या मान लिया, चित्त का पर्याय मान लिया। इस प्रकार बुद्धि अनेकार्थ में प्रयोग की गयी है।

शोधपत्रसार- शोधकर्ता को शोधपत्रा के माध्यम से यह निष्कर्ष विशिष्टाद्वैत के सन्दर्भ में बुद्धितत्व की समीक्षा का प्राप्त हुआ कि बुद्धि ही प्रकृति की पर्यायी है, स्मृति की पर्यायी है, धृति की पर्यायी है एवं मन भी बुद्धि का ही पर्याय है। प्रसंगानुसार इन सब के नाम परिवर्तन होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. आचार्य जगदगुरु श्रीभगवत् विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त डॉ. स्वामी राधवाचार्य वेदान्ती शास्त्री देवर्षि कमलनाथ अध्यक्ष, श्री जानकी नाथ बड़ा शास्त्रीविष्णु प्रस मंदिर ट्रस्ट रेवासा सीकर (राज) 2003

2. गोयन्दका श्रीहरिकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता गीताप्रेस गोरखपुर, 2017 रामानुजभाष्य हिन्दी अनुवाद

3. लता डॉ. सुमन विशिष्टाद्वैत की आचार परिमलपब्लिकशन्स, मीमांसा दिल्ली, 2000

4. शास्त्री प्रो. डॉ. प्रभाकर भगवन्निम्बार्काचार्य रचना प्रकाशन, जयपुर, 2017 सिद्धान्त उपासना

5. गुप्त डॉ. रामनिवास दर्शनाचार्य भारतीयदर्शन लक्ष्मीप्रकाशन, दिल्ली

6. त्रिपाठी श्री रामशरण शास्त्री वेदान्तसारः चैखम्भा विद्याभवन, वाराणसी-221001

7. शर्मा डॉ. उमाशंकर ‘ऋषि’ श्रीमल्माधवाचार्यकृतः चैखम्भा विद्याभवन, सर्वदर्शन संग्रहः वाराणसी-221001/2016

8. आचार्य श्रीभद्रवल्लभ श्रीमदब्रह्मसूत्राणु भाष्यम् अक्षय प्रकाशनेन देहलीस्थ
प्रणीतम् 1927/298/2005

9. दास डॉ. स्वामी द्वारका वेदान्तसिद्धान्त रत्नांजलिः भारतीयविद्या संस्थान
(काठियाबाबा) वाराणसी 2017

10. भारती स्वामी परमानन्द वेदान्तप्रबोध वेदान्तदर्शन समिति करनाल (हरियाणा)